'संतकाव्य की प्रवृत्तियां' का शेष भाग

डॉ० सावित्री चन्द्र पाठक.
प्राध्यापक, एस० एस० कॉलेज, जहानाबाद

(3) गुरु की महत्ता :- संतकाव्य के समस्त कवियों में गुरु के प्रति असीम श्रद्धा, अनुराग एवं समर्पण का भाव दिखाई पड़ता है। गुरु ही वह प्रकाशस्तंभ है जो हमें भवसागर के अंधकार में अपने सच्चे मार्ग का संधान करने में हमारा मार्ग प्रदर्शन करता है। इसीलिए संत मत में गुरु का स्थान अत्यंत ऊँचा है। उन्हें भगवत्सत्ता से भी उच्चस्थान का अधिकारी स्वीकार किया गया है-

गुरु गोविन्द दोउ खड़े काको लागूं पाँय।
बलिहारी गुरु आपनि जिन गोविन्द दियो बताय॥

गुरु की प्राप्ति सामान्य घटना नहीं है। गुरु ही वह तत्व है जो सृष्टि के चरम और परम तत्व का साक्षात्कार करवाता है। यदि गुरु की प्राप्ति नहीं होती तो जीवन की साधना अधूरी रह जाएगी और जीवन ही अर्थहीन रह जाएगा। जीवन की सार्थकता की प्राप्ति बिना गुरु के संभव नहीं है। इसीलिए इस बहुमूल्य गुरु तत्व की प्राप्ति जीवन की अनोखी और चमत्कारी घटना है। सद्गुरु की प्राप्ति के लिए यदि प्राण भी न्योछावर करना पड़े तो भी यह सौदा सस्ता है। इसीलिए कबीर कहते हैं-

"सीस दिए जो गुरु मिले तो भी सस्ता जान।"

केवल संतमत में ही नहीं वरन सगुणमत में भी सद्गुरु की बड़ी महिमा गायी गयी है। गोस्वामी तुलसीदास ने तो गुरु की महिमा में लगभग पूरा ही प्रस्तुत किया है। फिर भी निर्गुण पंथ में गुरु की महिमा कुछ अधिक ही मानी गयी है।

(4) जाति-पाति का विरोध :- संतकाव्य का सर्वमान्य सिद्धांत है कि समस्त प्राणियों में एक ही भगवद् तत्व का निवास है। सभी मनुष्य एक ही

ईश्वर की संतान हैं। अतः जातीय विभाजन पर इनकी टिप्प-
बड़ी कठोर प्रतीत होती है। ये सार्वभौम मानवधर्म को स्वीकार
करते हैं इसीलिए इनकी दृष्टि में संपूर्ण मानवजाति में एकता
कहीं कोई वैषम्य नहीं। संपूर्ण मानव जाति को नाना कोटियों में
विभाजित कर किसी को ऊँचा और किसी को नीचा सिद्ध करने
की प्रवृत्ति का इन्होंने अत्यंत प्रखर स्वर में विरोध किया है।
कबीर का व्यंग्य इतना तीखा और कठोर है कि इससे जाति
के प्रति उनके मन की वितृष्णा का सहज ~~अ~~ अनुमान लगाया जा
सकता है — "जो तुम बामन बामनी जाया, आन बाट ह्वै काहे न आया।"
कभी उनका स्वर सौम्य हो जाता है मानो समझा रहे हों —

"जाति-पाति पूछे नहीं कोई।
हरि को भजे सो हरि का होई॥"

आखिर उनका स्व... अभेदता का लक्ष्य करते हुए ~~कहते~~ कहते हैं —

"हिन्दुअन की हिन्दुआई देखी तुरकन की तुरकाई।"

तात्पर्य यह कि ~~क~~ भारतीय समाज का जातीय वर्गीकरण क-
किसी भी रूप में स्वीकार नहीं है। संपूर्ण संत काव्य एक
स्वर से जातीय वर्गीकरण को नकार कर संपूर्ण सृष्टि में
ब्रह्म की सत्ता को स्वीकृत ~~[illegible]~~ में [illegible] हैं कि
ऊँच और नीच, लघु और विराट का यह विभाजन
इनके आक्रोश की अग्नि में समिधा का काम करता है।